

शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा का अध्ययन

Preeti Shakya^{1*}, Dr. Dileep Kumar Shukla²

¹ Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

² Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.

सारांश - वर्तमान अध्ययन "शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा का अध्ययन" के संबंध में आयोजित किया है। प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षा प्रणाली को राष्ट्रीय सेवा और विकास के लिए प्रतिबद्ध चरित्र के युवा पुरुषों और महिलाओं का उत्पादन करना चाहिए। तभी शिक्षा राष्ट्रीय प्रगति को बढ़ावा देने, समान नागरिकता और संस्कृति की भावना पैदा करने और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेगी। हमारी राष्ट्रीय शिक्षा के प्रत्येक चरण में नैतिकता की उन्नति हमारी जाति के गुणों को बढ़ावा देगी। सरकार की इस चिंता की ओर ध्यान आकर्षित करने की आवश्यकता है कि विद्यालय विद्यार्थियों के विकास के नैतिक पहलू पर अपर्याप्त ध्यान दे रहे हैं। आवश्यक मूल्यों के क्षरण और समाज में बढ़ती सनक, अपराध, किशोर गर्भावस्था, आत्महत्या और छात्र अनुशासन पर बढ़ती चिंता ने शिक्षा को सामाजिक और नैतिक विकास के लिए एक सशक्त उपकरण बनाने के लिए पाठ्यक्रम में पुनः समायोजन की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित किया है।

मुख्यशब्द - शिक्षा प्रणाली, नैतिक शिक्षा, राष्ट्रीय सेवा और विकास, राष्ट्रीय शिक्षा प्रगति

-----X-----

प्रस्तावना

आनंद के लिए, भय के लिए, किसी सांसारिक लाभ के लिए या जीवन के लिए भी नैतिक सिद्धांतों को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। यह कहा गया है कि, 'नैतिक शिक्षा उतनी ही पुरानी है जितनी स्वयं शिक्षा'। हम शिक्षा को नैतिकता से अलग नहीं कर सकते। 1 "नैतिकता शिक्षा का एक अनिवार्य हिस्सा है। यह सही सोच, आत्म-नियंत्रण, समाज की सेवा, दूसरों को सम्मान और हमारे कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के बारे में निरंतर जागरूकता प्रदान करता है।" पारंपरिक पारिवारिक पैटर्न का पतन, पुरुषों और महिलाओं दोनों का घर से काम की दुनिया में पलायन, टेलीविजन और सड़कों के प्रभाव में बच्चों का परित्याग, और हिंसा की महामारी जो आज लाखों युवाओं के जीवन को छूती है, दर्शाता है कि यह समय स्कूलों के भीतर घर पर ऐतिहासिक रूप से किए गए देखभाल, पोषण, सामाजिककरण कार्यों को फिर से बनाने का है। विभिन्न सांस्कृतिक और सामाजिक कारणों से, अधिकांश घर आज वह देखभाल प्रदान नहीं कर सकते हैं जिसकी स्वस्थ विकास के लिए आवश्यकता होती है। बढ़ती हिंसा और सामाजिक विघटन के जवाब में, स्कूलों में 'घर के नैतिक

समकक्ष' प्रदान करने की आवश्यकता है। 2 "हमारी पूरी नैतिक शब्दावली बदल गई है, आधुनिक संस्कृति की तरह, आधुनिक शिक्षा कर्तव्यों पर अधिकार, समुदाय पर व्यक्तिवाद, स्वायत्तता पर जोर देती है। अधिकार पर, मोक्ष पर खुशी, आत्म-बलिदान पर आत्म-सम्मान, और विवेक पर लागत-लाभ विश्लेषण"। समाज में शांति के लिए नैतिक शिक्षा समय की जरूरत है। शिक्षा का नैतिक उद्देश्य पृष्ठभूमि में आ गया है, क्योंकि औद्योगीकरण के साथ, पूंजीवादी बाजारों की मांग मुख्य रूप से कुशल जनशक्ति के प्रावधान के आसपास केंद्रित होती है, जो श्रम बाजारों में एकीकृत होने के लिए तैयार होती है। 3 "हम इतिहास के सबसे अनुशासनहीन युग में जी रहे हैं। इस उम्र पर इतना गंभीर आरोप लगाया जाता है। पिछली उम्र ने विशिष्ट उपाय किए थे। आदिम संस्कृतियों में, किशोर लड़कों को नैतिक शिक्षा दी जाती थी, जिसमें आज्ञाकारिता, साहस, सच्चाई, आतिथ्य, रिश्ते, चुप्पी और दृढ़ता से संबंधित आदिवासी दायित्व शामिल थे। नैतिक शिक्षा प्राचीन भारतीय शिक्षा की एक केंद्रीय विशेषता थी। प्राचीन सभ्यता ने नैतिक जीवन के विकास और संवर्धन की मांग की। युवाओं को सद्गुणी जीवन जीने

की कला में प्रशिक्षित और निर्देशित किया गया। उनकी नैतिक साधना की पद्धति एक महान उन्नति थी। शिक्षा आध्यात्मिक थी और छात्रों में ईश्वर के प्रति स्नेह था। इसने उन्हें प्यार करने वाला, मिलनसार, सच्चा और खुश किया। "मनुष्य को पांच गुणों, दया, अच्छे आचरण, ज्ञान, ईमानदारी और सम्मान के प्रति सच्चे होना चाहिए। इन पांचों संबंधों-माता-पिता और संतान, पति-पत्नी, शासक और प्रजा, बड़े भाई और छोटे भाई और मित्र और मित्र के प्रति सच्चे रहेंगे तो दुनिया में कोई दुख नहीं होगा।

हमें अपनी संस्कृति की नैतिक स्थिति में सुधार करना होगा। हमें इस आवश्यकता की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए और नैतिक पतन को रोकना चाहिए। घर, सामाजिक संस्थाओं की नैतिक गतिविधियों को तेज करने की जरूरत है और स्कूलों में नैतिक शिक्षा की एक निश्चित योजना स्थापित की जानी है। शिक्षा में नैतिक प्रशिक्षण को शामिल करने से जातक उच्च नैतिक स्वर के होंगे और झूठ बोलने से हिचकेंगे। अनुशासित समाज को बनाए रखने के लिए हमें कुछ करना होगा। हम निष्क्रिय, सहिष्णु और उदार नहीं हो सकते। हम युवाओं को उनके आवेगों और इच्छाओं के प्रति अबाधित प्रतिक्रिया में बड़े होने की अनुमति नहीं दे सकते। हमें अनुशासित स्त्री-पुरुष बनाना है। हम नई पीढ़ी को सभ्य बनाने के लिए क्या कर रहे हैं? यह एक सार्वभौमिक मान्यता है कि नैतिक प्रशिक्षण के लिए सबसे प्रभावी एजेंसी घर है। समकालीन भारत में घर का क्या? भारतीय घर, आंशिक रूप से परिवार के बढ़ते विघटन और इसके परिणामस्वरूप संबंधों के ढीलेपन के कारण, एक नैतिक शक्ति के रूप में सबसे अपर्याप्त रूप से कार्य कर रहा है। इसमें अनुशासन नैतिकता और आध्यात्मिकता का अभाव है। एक और संभावित नैतिक शक्ति, धर्म है। इसने अपना जोर समाज के सुधार के लिए व्यक्तिगत आत्मा को शुद्ध करने और ऊपर उठाने के अपने पूर्व कार्य से हटा दिया है और इसके परिणामस्वरूप पारंपरिक बुनियादी नैतिकता कम हो गई है। सही आचरण के लिए एक और संभावित प्रमुख शक्ति, प्राचीन काल में एक सशक्त रूप से सक्रिय बल, और निस्संदेह कमोबेश एक सदी पहले के रूप में अब भी कमोबेश सक्रिय है, औपचारिक शिक्षा है - स्कूल और कॉलेज। आज उस शक्ति का क्या हो गया है? क्या यह वस्तुतः कोई नहीं है? आज हम भारत में नैतिक शिक्षा में जो कर रहे हैं और पिछले युगों ने जो किया है, उसके बीच उभरता हुआ अंतर जबरदस्त है। कंट्रास्ट हमारी ओर से किस सकारात्मक कार्रवाई को वांछनीय-यहां तक कि अनिवार्य के रूप में सुझाता है? न केवल तकनीकी रूप से,

बल्कि ज्ञान और चरित्र के लिए प्रशिक्षित नेताओं की तत्काल मांग है। समाज को अन्याय से मुक्त करने के लिए, नैतिक शिक्षा को छात्रों को सामाजिक न्याय के सार्वभौमिक मूल्यों के संदर्भ में सामाजिक मानदंडों के पुनर्निर्माण की क्षमता के साथ सशक्त बनाना चाहिए। वर्तमान संस्कृति युवाओं में कई तरह के विपरीत मानदंड और मूल्य पैदा करती है, जैसे दूसरों के लिए घृणा और असहिष्णुता और हत्या, गुलामी, यातना और उत्पीड़न पर प्रतिबंध। हमें नैतिक पतन को उलटना होगा।

"हमारे देश में वर्तमान में प्रचलित शैक्षिक प्रणाली के तहत पाठ्यक्रम में शामिल शैक्षणिक विषयों से संबंधित ज्ञान प्रदान करने पर जोर दिया जाता है, और आमतौर पर बच्चे के चरित्र और आंतरिक व्यक्तित्व के विकास पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि बच्चे हमारे देश की गौरवशाली सांस्कृतिक परंपराओं और महान नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों, जिन पर वह संस्कृति आधारित है, के बारे में जानने का कोई अवसर प्राप्त किए बिना ही बड़े हो जाते हैं। सामाजिक समरसता और कल्याण की प्राप्ति के लिए आज छात्र शक्ति का सामूहिक रूप से उपयोग नहीं किया जाता है। हाल ही में हमारे शैक्षणिक संस्थानों के वातावरण को प्रदूषित करने वाली बेचैनी निस्संदेह एक आत्मा-बीमारी का परिणाम है जिसने भारतीय युवाओं को उनकी अंतरतम सांस्कृतिक के कारण जब्त कर लिया है आकांक्षाएं अनसुनी रह गई हैं। "दुनिया के सभी देशों में से, हमारे पास भारत में सबसे समृद्ध सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत है, लेकिन यह भाग्य की एक दुखद विडंबना है कि जब से हमने स्वतंत्रता प्राप्त की है, हम इस देश के युवाओं को यहां तक कि सबसे छोटे अवसर से भी वंचित कर रहे हैं। धर्मनिरपेक्षता के नाम पर सभी नैतिक शिक्षा पर प्रतिबंध लगाकर इस विरासत का हिस्सा बनने वाले महान नैतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को आत्मसात करें। भारतीय संविधान का धर्मनिरपेक्षता केवल यह सुनिश्चित करने के लिए है कि राज्य द्वारा किसी के खिलाफ कोई भेदभाव नहीं किया जाता है। धर्म या विश्वास के आधार पर नागरिक और सभी धर्मों और धर्मों के लोगों को अपने धर्म के अभ्यास और प्रचार के मामले में समान स्वतंत्रता का आनंद लेने के लिए सक्षम किया गया है।

नैतिक रूप से युवा मन को ढालने में शिक्षकों की जिम्मेदारी

शिक्षा किसी व्यक्ति की जन्मजात या विरासत में मिली प्रकृति को नहीं बदल सकती है, उदाहरण के लिए इसकी आनुवंशिक संरचना, शिक्षा बच्चे की अर्जित प्रकृति को बदल सकती है और ढाल सकती है, एक ऐसी प्रकृति जो एक बच्चे के दुनिया में प्रवेश करने और मानवता के तीन स्कूलों में दाखिला लेने के बाद प्राप्त होती है: वह घर जहाँ माता-पिता बच्चे के सशक्तिकरण का पहला स्रोत होते हैं, वह स्कूल जहाँ बच्चे को उसके सशक्तिकरण का दूसरा स्रोत प्राप्त होता है, और समाज उसके सशक्तिकरण का तीसरा स्रोत होता है। सशक्तिकरण के तीनों स्रोतों का अतीत में बच्चे के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। आज, परिवार व्यवस्था के टूटने और माता-पिता दोनों के काम करने के कारण, माता-पिता उस मार्गदर्शन को प्रदान करने में असमर्थ होते जा रहे हैं जो उन्होंने कभी किया था। समाज बहुत खराब हो गया है और हमेशा सशक्तिकरण का एक सकारात्मक स्रोत प्रदान करने के लिए भरोसा नहीं किया जा सकता है। इस प्रकार, औपचारिक स्कूली शिक्षा को मानव चरित्र को परिभाषित करने में एक केंद्रीय भूमिका निभानी होती है। इसे बच्चे के अकादमिक के साथ-साथ मानव और आध्यात्मिक विकास को संबोधित करके बच्चे की अर्जित प्रकृति को ढालने के लिए नई जिम्मेदारियों को लेने की जरूरत है।

एक व्यापक, बोलडर शिक्षा के दिल में यह विश्वास है कि शिक्षा का उद्देश्य जीवन के उद्देश्य से अलग नहीं हो सकता है।

लोकतंत्र में शिक्षा सबसे बड़ी भूमिका निभाती है। शिक्षकों को हमारे युवाओं के दिमाग को प्रशिक्षित और ढालना होगा ताकि वे हमारे लोकतांत्रिक राज्य के योग्य नागरिक बन सकें। वे उन्हें जो भी प्रशिक्षण देंगे, वह समाज को बदल देगा। यह बदलाव एक बेहतर और स्वस्थ दुनिया का निर्माण करेगा। शिक्षकों पर भारी जिम्मेदारी है। एक बच्चा लगभग 15 से 16 साल तक स्कूल में रहता है, तीन साल की उम्र से शुरू होकर लगभग 18 या 19 साल की उम्र तक। वर्तमान में, उनमें से कई निम्न प्राथमिक स्तर को पूरा करने से पहले ही छोड़ देते हैं; नया कार्य कार्यक्रम हमारे बहुमूल्य मानव संसाधनों के इस क्षरण को रोकने के लिए कदम उठाएगा। "हर समय, स्कूल में, बच्चा ज्ञान और विचार प्राप्त कर रहा है। इन पूर्व-विश्वविद्यालय चरणों में शिक्षा का विशेष महत्व है क्योंकि ये वे वर्ष हैं

जब मानव मन सबसे अधिक प्रभावशाली होता है, और इसलिए भी कि अधिकांश छात्र बारहवीं कक्षा पूरी करने के बाद औपचारिक शिक्षा छोड़ देंगे। इनमें से केवल एक प्रतिशत है जो किसी विश्वविद्यालय में जाता है। इसलिए अधिकांश छात्र अपने जीवन के सबसे प्रारंभिक वर्षों के दौरान पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की देखरेख और प्रभाव में रहते हैं। यह एक जबरदस्त जिम्मेदारी रखता है, और हमारे सभी शिक्षकों पर इन स्तरों पर एक महान विशेषाधिकार प्रदान करता है। उस जिम्मेदारी का निर्वहन करने के लिए, उन्हें स्वयं नैतिक रूप से उन्मुख होना होगा; तभी वे अपने छात्रों को यह नैतिक दिशा दे सकते हैं।" हमारे शिक्षकों और प्रशासकों के दृष्टिकोण में बदलाव की बहुत आवश्यकता है। दुनिया का नागरिक होने के गौरव और विशेषाधिकार की भावना में शामिल परिवर्तन, दुनिया की सेवा में एक विशेष कार्य करने का गौरव। यह केवल पैसे से बड़ी और तीव्र प्रेरणा है। धन की प्रेरणा, अन्य उच्च प्रेरणाओं द्वारा असमर्थित, लोगों को, जिसे हम अंग्रेजी में कहते हैं, भाड़े के सैनिकों में परिवर्तित करते हैं। भाड़े का आदमी केवल पैसे के लिए काम करता है। जब हमारा देश सदियों से विदेशी अधीन था, हमारे कई बुद्धिजीवी और अन्य सक्षम लोग विदेशी शासकों के पास जा रहे थे, उन्होंने कहा, 'यदि आप हमें अच्छा वेतन देते हैं, तो हम आपके लिए काम करेंगे'। वे अपनी बुद्धि और प्रतिभा को सबसे अधिक बोली लगाने वाले को बेच देते थे! इस तरह ऐसे लोग सदियों तक भाड़े के सैनिकों के रूप में एक साथ काम करते थे। लेकिन, यह दुखद है कि हमारे कई शिक्षित लोग, आज भी हमारे स्वतंत्र भारत में, ऐसे भाड़े के व्यक्ति से नीचे हैं। भाड़े का व्यक्ति उस पैसे के लिए कड़ी मेहनत करता है जो उसे भुगतान किया जाता है; लेकिन हमारे बहुत से लोग तनख्वाह और तनख्वाह पाने के लिए भी ईमानदारी से दिन का काम नहीं करते! ये बदलना होगा।

छात्रों के नैतिक अभिविन्यास के लिए शिक्षक को नैतिक रूप

अगली पीढ़ी में भारत जो कुछ भी होगा वह इस बात पर निर्भर करेगा कि शिक्षक आज कक्षाओं में अपने छात्रों के साथ क्या करते हैं। स्कूल में आज के बच्चे अगली सदी की शुरुआत में काम करना शुरू कर देंगे और अपनी जिम्मेदारियों को निभाएंगे। शिक्षकों को उन्हें वफादारी और जिम्मेदारी की भावना देनी होगी।

शिक्षकों को अपने दिमाग से जो कुछ भी नकारात्मक और कमजोर है उसे दूर करने में मदद करनी चाहिए। हमारा पिछला इतिहास हमें कुछ अच्छा और कुछ बुरा देता है; हमें जो बुरा है उसे खत्म करना है और जो अच्छा है उसे मजबूत करना है। छात्रों को अपनी राष्ट्रीय विरासत के इन दो पहलुओं के बीच अंतर करना सीखना चाहिए। प्रत्येक सांस्कृतिक विरासत के ये दो पहलू होते हैं। यह शिक्षा ही है जो दोनों के बीच भेदभाव करने की क्षमता और जो बुरा और अप्रासंगिक और कमजोर है उसे अस्वीकार करने का साहस पैदा करती है। शिक्षा के दौरान, हमारे युवाओं को सकारात्मक तत्वों की पहचान करने और उन्हें बनाए रखने में मदद करनी चाहिए और उन्हें अपने योगदान से मजबूत करके अगली पीढ़ी तक पहुंचाना चाहिए।

एक शिक्षक कक्षा में प्रवेश करता है, कक्षा को देखता है, बस सामने के छात्रों को देखता है, एक विजयी मुस्कान के साथ उनका स्वागत करता है, और महसूस करता है कि हमारे समाज के विभिन्न स्तरों से आए ये बच्चे ज्ञान की तलाश में हैं। सदियों से उनके पास यह अवसर नहीं था; हमारे स्वतंत्र भारत का संविधान हमारे देश के प्रत्येक बच्चे को शिक्षा और अच्छे जीवन का वादा करता है; और ये बच्चे, कुछ दूर-दराज के गांवों से भी, उस विशेषाधिकार का लाभ उठाने के लिए आए हैं, जो अब तक हमारे पूर्व सामंती व्यवस्था में कुछ लोगों के लिए आरक्षित था। और मैं यहां इन बच्चों को सर्वोत्तम ज्ञान और प्रेरणा देने के लिए हूँ। इस रवैये के साथ, जब शिक्षक बोलने के लिए अपना मुंह खोलता है, तो हर शब्द सामने वाले बच्चों को उत्तेजित करेगा। शिक्षक तब केवल एक व्यक्ति, एक स्व-केंद्रित वेतनभोगी कर्मचारी या भाड़े के कर्मचारी नहीं रह जाते हैं, लेकिन एक सच्चे शिक्षक, एक प्रबुद्ध नागरिक एक पूर्ण व्यक्ति बन जाते हैं। "एक व्यक्ति के रूप में, आप आनुवंशिक रूप से सीमित इकाई हैं, अपनी पसंद और नापसंद, अपनी इच्छाओं, अपनी महत्वाकांक्षाओं तक ही सीमित हैं। लेकिन जैसे ही आप एक व्यक्ति बन जाते हैं, आप विस्तार करते हैं, आप अन्य लोगों के जीवन में प्रवेश करने में सक्षम होते हैं और अन्य लोगों से भी प्रतिक्रिया प्राप्त करते हैं। यही व्यक्तित्व और व्यक्तित्व के बीच का अंतर है।" व्यक्तित्व व्यक्तित्व से अधिक समृद्ध शब्द है। व्यक्तियों की तुलना बिलियर्ड गेंदों से की जाती है। बिलियर्ड बॉल केवल अन्य बिलियर्ड बॉल से टकराना जानती है। इसी तरह, एक व्यक्ति के रूप में मनुष्य अन्य व्यक्तियों के साथ सहयोग नहीं कर सकता है, लेकिन अधिक बार उनसे टकराएगा। व्यक्तित्व के स्तर पर शिक्षक और शिक्षक और शिक्षक और छात्र आपस में

टकराते हैं। जैसे ही आप एक व्यक्ति बन जाते हैं, आप दूसरों के दिलों में प्रवेश करने और दूसरों को अपने दिल में प्रवेश करने की क्षमता विकसित करते हैं; आप एक टीम के रूप में अन्य शिक्षकों और छात्रों के साथ काम करने में सक्षम हो जाते हैं। व्यक्तित्व से व्यक्तित्व की ओर बढ़ने से आंतरिक समृद्धि आती है, क्योंकि वह विकास एक आध्यात्मिक विकास है।

शिक्षक छात्रों का जीवन और चरित्र

"शिक्षक को मूल्यों के बारे में ठोस सैद्धांतिक ज्ञान होना चाहिए और व्यावहारिक जीवन में लागू होना चाहिए और आदर्श शिक्षक होना चाहिए और छात्रों में एकता, एकीकरण और अंतर्राष्ट्रीय भाईचारे की अवधारणा विकसित करनी चाहिए।" आधुनिक समय में, जब किताबें सस्ती हैं और पुस्तकालय की सुविधा काफी अच्छी है, छात्र स्कूल या कॉलेज छोड़ने के कुछ वर्षों के भीतर जो कुछ सीखते हैं उसे भूल जाते हैं। प्रत्येक छात्र को स्कूल में जो कुछ भी सीखा है उसका एक हिस्सा प्रतिदिन दोहराना चाहिए। प्राचीन काल में, दीक्षांत समारोह के समय, चांसलर विशेष रूप से छात्र को दैनिक पुनरीक्षण के अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

स्वास्थ्य गया तो कुछ गया।

लेकिन अगर चरित्र चला गया, तो सब कुछ चला गया।

व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए नैतिक मूल्यों की शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। इसमें अनुशासन, शिष्टाचार और शिष्टाचार, व्यवहार, स्वयं पर नियंत्रण, राजनीति, शक्ति, देशभक्ति, प्रेम और एक-दूसरे की देखभाल शामिल है। इसमें सच बोलना, चोरी न करना, अच्छा नागरिक बनना भी शामिल है। सभी के साथ स्वस्थ और मैत्रीपूर्ण संबंध विकसित करने के लिए नैतिक मूल्य भी आवश्यक हैं। नैतिक मूल्यों की हानि देश की प्रत्यक्ष क्षति है। एक बच्चे को प्रारंभिक अवस्था में नैतिक शिक्षा दी जानी चाहिए। उसे नैतिक, नैतिक और पारिवारिक मूल्यों का महत्व सिखाया जाना चाहिए। पारिवारिक मूल्यों से हमारा तात्पर्य अच्छे विचारों, अच्छे इरादों और अच्छे कर्मों से है, उन लोगों से प्यार करना और उनकी देखभाल करना जिनके हम करीब हैं और हमारे समूहों या समुदायों का हिस्सा हैं, जैसे माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्य और दोस्त भी। उन्हें दूसरों के साथ उन्हीं मूल्यों के साथ व्यवहार करना सीखना चाहिए जिनके साथ वे व्यवहार करना चाहते हैं। नैतिक

मूल्य सही आचरण के सिद्धांतों के एक समूह को परिभाषित करते हैं। एक बच्चे को स्कूल में नैतिक मूल्यों को सीखना चाहिए, कई स्कूल छात्रों को किताबों, नैतिक कहानियों, निबंधों, नाटकों के माध्यम से अपने चरित्र का विकास करना सिखाते हैं। एक बच्चे में मूल्यों और सिद्धांतों का नैतिक सेट प्रदान करने का एक आसान और सर्वोत्तम तरीका। बच्चे को पढ़ाया जाना चाहिए ताकि वह ज्ञान, साहस, न्याय जैसे नैतिक गुणों से भरा हो। इन दिनों, हम देखते हैं कि कुछ छात्र शिक्षकों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं; लोग हड़ताल पर चले जाते हैं, बसों को जलाते हैं, खराब राजनीति में शामिल होते हैं या अन्य प्रकार की हानि पहुँचाते हैं, जिससे नैतिक मूल्यों का हास होता है। उनमें इन नैतिक गुणों के ठीक विपरीत गुण होते हैं जैसे कि वे अन्याय, अत्याचार में विश्वास करने लगते हैं, या कायरता हो सकते हैं। एक बच्चा जान जाता है और आसानी से तय कर सकता है कि उसके लिए क्या सही है और क्या गलत है, समाज में व्यवहार करना सीखता है, वह नैतिक मूल्यों के माध्यम से अपनी जिम्मेदारियों को समझता है, सही और गलत में अंतर करता है। नैतिक मूल्य सही और गलत में अंतर करने और बाधाओं का सामना करने के बावजूद सही रास्ते पर चलने का साहस रखने की कला है। ऐसी नैतिकता हमारे विचारों, विश्वासों से प्रभावित या निर्मित होती है। हमारा परिवार, दोस्त, सहकर्मी हमारे विचारों और विश्वासों को आकार देने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

भारत में अतीत से मूल्योन्मुखी शिक्षा विद्यमान है। यह प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक काल में विविध परिवर्तन लेता है। 1947 में जब भारत अंग्रेजों से मुक्त हुआ, शैक्षिक क्षेत्र में विभिन्न परिवर्तन हुए, स्वतंत्रता के बाद मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान करने में भारतीय दार्शनिकों विवेकानंद, टैगोर, गांधीजी, अरबिंदो की बहुत बड़ी भूमिका थी।

निष्कर्ष

शिक्षा के सभी चरणों में पाठ्यक्रम प्राचीन वैदिक लोगों की समृद्ध सांस्कृतिक पहचान के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए बनाया गया है। एक प्रणाली के रूप में, जो मनुष्य के एकीकृत विकास को बढ़ावा देती है, निम्नलिखित सामग्री पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में भी सभी स्तरों पर शिक्षा के सभी कार्यक्रमों में इस सामग्री को शामिल करने का प्रयास किया जाना चाहिए। 'भारतीय संस्कृति और

पारंपरिक मूल्यों को पूरी दुनिया बड़ी श्रद्धा और उच्च आशाओं की नजर से देखती है। भगवद्गीता, उपनिषद और अन्य वेदांत शास्त्रों में प्रस्तुत भारतीय आदर्शों को दृढ़ता से स्वीकार किया जाता है। लोगों को एक उपयोगी, व्यावहारिक ज्ञान की आवश्यकता है, डिग्री की नहीं। प्राचीन भारतीय दर्शन जीवन से निपटने के लिए पर्याप्त है और मनुष्य की सभी आकांक्षाओं को पूरा करता है। गंभीर विचारक और परिपक्व दिमाग अब वैज्ञानिक ज्ञान और तकनीकी कौशल के शक्तिशाली पेड़ पर भारतीय संस्कृति के सर्वोत्तम तत्वों को ग्राफ्ट करने की आवश्यकता को महसूस कर रहे हैं। दुनिया की असली भलाई विज्ञान और प्राचीन भारतीय दर्शन का एक साथ उपयोग करने में है। अंततः मानव जाति के लिए एक ऐसे समाज को प्राप्त करना संभव होगा जिसमें वैज्ञानिक रूप से उन्नत राष्ट्रों के जीवन स्तर के उच्च स्तर को सहानुभूति, सहायता, दया, दुर्भाग्य में स्वभाव की समरूपता, शांति और आत्मा की खुशी के साथ जोड़ा जाए, जो संतों और विनम्र लोगों की विशेषता है। प्राचीन भारत। ज्ञान प्राप्त करने के भारतीय तरीके के साथ ज्ञान प्राप्त करने की वैज्ञानिक पद्धति को पूरक करने की बहुत आवश्यकता है। यह भारत की प्रारंभिक शिक्षाओं के लिए है कि किसी को आत्मज्ञान की ओर मुड़ना चाहिए, क्योंकि वैज्ञानिक तरीकों ने हमें इंद्रियों की बाहरी दुनिया पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करने के कारण हमारे दृष्टिकोण को संकुचित कर दिया है। समय आ गया है जब प्राचीन भारतीय और वैज्ञानिक विचारों को एक दूसरे में प्रवेश करना होगा। हर बच्चे का दावा है कि हमारी प्राचीन संस्कृति में जो सबसे अच्छा है, उसकी सैद्धांतिक भिन्नताओं के प्रति उदासीनता, मत और पंथ के मतभेदों की सहनशीलता, सभी धर्मों की एकता पर जोर इसकी आवश्यक विशेषताएं हैं। सभी विविध सिद्धांत और मार्ग अंततः एक ही सर्वोच्च सत्य की ओर ले जाते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

शेफर्समैन, एस। (2018)। पब्लिक स्कूलों में नैतिकता और मूल्यों को पढ़ाना-एक मानवतावादी परिप्रेक्ष्य। 17,2005 को <http://www.freequery.com/teaching-morals.html> से प्राप्त किया गया।

क्विसुम्बिंग, एल.आर. (2018)। एक शांतिपूर्ण विश्व के लिए छोटे बच्चों को शिक्षित करना। राजनीतिक रैली में दिया जाने वाला भाषण।

नुची, एल। (2017)। स्कूल और कक्षाएँ संरचना और बच्चों का सामाजिक विकास। शिक्षक और अध्यापन। मिलन: फ्रैंको एंजेली प्रकाशक।

कैपबेल, वी।, और बॉन्ड, आर। (2017)। एक चरित्र शिक्षा पाठ्यक्रम का मूल्यांकन। न्यूयॉर्क: इरविंगटन पब्लिशर्स।

हरलॉक, एलिजाबेथ। (2019)। कॉलेज के छात्रों की मूल्य प्रणाली के सहसंबंधों का एक अध्ययन। प्रयोग वॉल्यूम। XXII (8)।

झा, वी.एन. (2019)। शिक्षा का शास्त्रीय भारतीय दर्शन। www.spiritualeducation.org/work/conf।

विजयलक्ष्मी, जी। (2019)। शिक्षकों द्वारा स्कूली बच्चों के मूल्यों को प्राथमिकता देना। शिक्षा और मनोविज्ञान में हालिया शोध, 11(3 और 4), 60-65।

श्री, उषा. (2016)। मूल्यों का आंतरिककरण। अप्रकाशित लेख।

भटनागर, सुरेश. (2004)। भारत में शिक्षा। मेरठ: लॉयल बुक डिपो।

डैश एम. (2000), एजुकेशन इन इंडिया- प्रॉब्लम्स एंड पर्सपेक्टिव्स, ईस्टर्न बुक कॉर्पोरेशन।

रामचंद्र, पी. और रामकुमार, वी. (2005)। भारत में शिक्षा। ईस्टर्न बुक कॉर्पोरेशन

शेषाद्रि। (1992)। मूल्यों में शिक्षा-ए सोर्सबुक। नई दिल्ली, एनसीईआरटी।

वशिष्ठ, आर. (2005). भारत में शिक्षा का इतिहास। ईस्टर्न बुक कॉर्पोरेशन

शर्मा, आर. (2016)। भारतीय शिक्षा का इतिहास, शुभी प्रकाशक।

शुक्ला, आरपी (2001)। पर्यावरण- हमारी शिक्षा में क्या खराबी है। विद्यालय शिक्षा। एक्स (111)।

98. सीबर, जेई (2017)। नैतिकता के लिए एक सामाजिक शिक्षण सिद्धांत दृष्टिकोण। नैतिक विकास और समाजीकरण। बोस्टन: एलिन और बेकन। इंक

शेफर्समैन, एस। (2014)। पब्लिक स्कूलों में नैतिकता और मूल्यों को पढ़ाना-एक मानवतावादी परिप्रेक्ष्य। 17,2005 को <http://www.freequery.com/teaching-morals.html> से लिया गया।

100. शारफे, हार्टमट। (2012)। प्राचीन भारत में शिक्षा, ब्रिल अकादमिक प्रकाशक, आईएसबीएन 978-90-04-12556-8.175। 11 जनवरी 2013 को लिया गया।

सिन्हा, डी।, और वर्मा, एम। (2012)। बच्चों में नैतिक मूल्यों का ज्ञान। मनोवैज्ञानिक अध्ययन, खंड 17, 1-6।

सिंह, वाई.के., नाथ, आर. (2015)। भारतीय शिक्षा प्रणाली का इतिहास। एपीएच प्रकाशन। पीपी. 172-175. आईएसबीएन 978-81-7648-932-4। 11 जनवरी 2013 को लिया गया।

शिवरामन, के. (2015)। हिंदू आध्यात्मिकता- वेदों से वेदांत तक। एससीएम

श्री, उषा. (2015)। मूल्य अभिविन्यास के लिए शिक्षक शिक्षा का पुनर्गठन। जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन, 16(4), 601-609।

Corresponding Author

Preeti Shakya*

Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur M.P.